

बाबा ने कहा, सुन्न अवस्था अर्थात बिजरूप अशरीरी बनने का अभी समय है, इसी अवस्था में रहने का अभ्यास करें।

आत्मा की सुन्न अवस्था माना संपूर्ण बिजरूप अशरीरी अवस्था. इस अवस्था में आत्मा को शरीर का भान नहीं रहता, आत्मा संपूर्ण कर्मेन्द्रियाँ जीत बन, अपने घर, परमधाम में बाबा के लव में लवलीन बन जाती हैं.

परमधाम, वह स्थान है जो, समय, संकल्प और साउण्ड से परे हैं. परमधाम हम आत्माओं का घर है, जो इस पांच तत्वों से ऊपर हैं. परमधाम, शांत और पवित्र स्थान है, जहां हमारे प्यारे-प्यारे शिवबाबा रहते हैं. आत्मा को बिजरूप अशरीरी अवस्था का अनुभव करने के लिए, अमृतवेले के समय एकान्त में बैठना हैं. (अमृतवेले वायुमण्डल भी शान्त और नेगेटिव विचारों से मुक्त रहता है, इसलिए वायुमण्डल हमारी बिजरूप अवस्था बनाने में मदद करता है). फिर एकाग्रता की शक्ति को युज कर स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित करना हैं. आत्मिक स्थिति बनाने के लिए, नीचे दिये हुए स्वमानो को सिमर कर, स्वयं को आत्मा निश्चय करना हैं.

मैं आत्मा हूं. भृकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूं.

मैं आत्मा हूं. शांत और पवित्र स्वरूप हूं. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

मैं आत्मा हूं. सत्य हूं. चैतन्य हूं. आनंद स्वरूप हूं.

मैं आत्मा हूं. अजड, अमर, अविनाशी हूं.

मैं आत्मा हूं. चैतन्य शक्ति हूं. ये शरीर जड़ हैं. मैं चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूं.

मैं आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र है.

जब आत्मा अपने स्वमान में स्थित होती है, तब दिव्य बुद्धि को युज कर परमधाम में अपने प्यारे-प्यारे परमपिता-परमात्मा, शिवबाबा को याद करना है. जैसे ही आत्मा, अपने बाप को याद करती है, बाबा में बहुत कशिश होने के कारण (बाबा के तरफ आत्मा को बहुत खिंच होने के कारण), आत्मा अपने को परमधाम में प्यारे-प्यारे बाबा के सामने महसूस करती है. इस स्थिति में ही आत्मा बहुत डीप साइलेन्स का अनुभव करती है, जिसे ही आत्मा की सुन्न अवस्था कहते हैं. इस अवस्था में आत्मा, पुरानी दुनिया, पुराने शरीर सहित सबकुछ भूल जाती है और आत्मा सर्वोत्तम अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है.

हम जानते हैं की जैसे कलियुग अन्त की तरफ जा रहा है, विश्व का वायुमण्डल और ही तमोप्रधान (नेगेटिव) होता जा रहा है. जीतना वायुमण्डल तमोप्रधान होता जायेगा, उतना हम आत्माओं को अशरीरी अवस्था की प्रैक्टिस करना मुश्किल होता जायेगा, इस लिए बाबा ने कहा, **अभी समय है अशरीरी अवस्था की प्रैक्टिस करने का.** अभी की प्रैक्टिस ही अन्त में हमें विजयी बनायेंगी.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .